बेनेदेतो क्रोचे (1866 - 1952)

क्रोचे आधुनिक कला के महानतम सौन्दर्य - शास्त्रियों में गिना जाता है। शायद यह कहना गलत न होगा कि आधुनिक सौन्दर्यशास्त्र में प्रमुखतम अधिकारी माना है। उसका जन्म इटली के प्रसिद्ध नगर नेपल्स के पास रचुजी नामक स्थान पर 25 फरवरी 1866 को हुआ। ये नेपल्स विश्वविद्यालय में पढ़ाते थे। उसने 69 ग्रन्थों की रचना की। इन्होंने सहज ज्ञान पर आधारित स्वतन्त्र सौन्दर्य - शास्त्र की स्थापना की। "What is beauty" विवेचना करते हुए सौन्दर्य के सम्बन्ध को अपने ~~एस्थेटिक~~ एस्थेटिक ग्रन्थ में क्रोचे ने सविस्तार चर्चायें की हैं जो 1902 में प्रकाशित हुआ था। क्रोचे विज्ञान और दर्शन के से कला को श्रेष्ठ मानता है। विज्ञान हमें उपयोगिता प्रदान करता है जबकि कला सौन्दर्य। इनकी पुस्तकों में से निम्न प्रमुख हैं।

Aesthetic
Logic
Philosophy of the Practical
Philosophy of the Spirit

क्रोचे के अनुसार प्रतिभा ही कला की वास्तविक सम्पत्ति है। ये प्रतिभायें क्या है?

Scanned with CamScanner

वह इस विषय पर कुछ नहीं कहता। उसकी कोई परिभाषा नहीं देता। हाँ इतना अवश्य होता है कि विचार के पूर्व कल्पना होती है। इस आधार पर वह लिखता है कि तर्क शक्ति विकसित होने से पूर्व मानव मस्तिष्क में कल्पना चित्र बनना सर्वप्रथम शुरू हुआ।
क्रोशे का दृष्टिकोण प्लेटो और हेगेल के समान बुद्धिवादी एवं आदर्शवादी था। क्रोशे ने हेगेल अलौकिकवाद की आलोचना की है। क्रोशे का सौन्दर्य दर्शन उसकी सबसे बड़ी, महानतम उपलब्धि है। उसके अनुसार मानव में दो ~~शक्तियाँ~~ शक्तियाँ होती है —

कल्पना (सहजज्ञान)
तर्क (तार्किक ज्ञान)

कल्पना के माध्यम से वह अपने मन की प्रतिमाओं की अभिव्यक्ति करता है और तर्क के माध्यम से वह इन प्रतिमाओं के आधार पर सिद्धान्त प्रतिपादित करता है। क्रोशे के ग्रन्थ "ऐस्थेटिक्स" को अत्यन्त सावधानी से पढ़ने की आवश्यकता है क्योंकि सौन्दर्य, सहजज्ञान, और एक्सप्रेशन को उसने बड़े गूढ़ अर्थों में और कहीं-कहीं पर्याय स्वरूप प्रयुक्त किया।